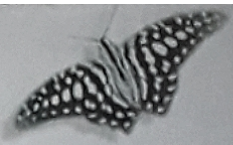

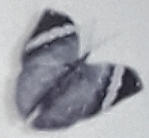

हिंदी साहित्य की वर्तमान विचारधारा

: मुख्य संपादक :

प्राचार्य डॉ. किशन पवार

: सहसंपादक :

डॉ. गोविन्द पांडव

प्रा. संतोष शिंदे

प्रा. सुजाता हजारे

अनुक्रमणिका

अ.क	नाव	शीर्षक	पृ.क.
१.	प्राचार्य डॉ. सय्यद शौकत अली	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी	४
२.	प्रा.डॉ.बळीराम व्ही.राख	वर्तमान का हिंदी गज़ल साहित्यः अभिव्यक्त विर्मश	८
३.	प्रा.रत्नमाला देशपांडे	आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति विमर्श	११
४.	डॉ. गोविन्द पांडव	कोर्ट मार्शल नाटक की संवेदना	१६
५.	प्रा.डॉ.वंदन बापुराव जाधव	ग्रांमाचलिक परिवेष के बदलते स्वरुपः बीस बरस	२०
६.	डॉ.बाबासाहेब कोकाटे	हिन्दी साहित्य में महानगरीय जीवन	२४
७.	प्रा. श्रीमंत जगन्नाथ गुंड	हिंदी साहित्य और वैश्विकरण	३०
८.	प्रा.शिवशेटटे शंकर गंगाधरराव	वैश्वीकरण और हिंदी साहित	३६
९.	डॉ. मनोहर जमधाडे	'समकालीन हिंदी कविता में ग्राम तथा महानगरीय बोध	४१
१०.	प्रा.डॉ.जोशी संजय व्यंकटराव	हिन्दी साहित्य की वर्तमान विचारधारा विमर्श के लिए प्रस्तुत शोधालेख जयशंकर प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय भावना	४३
११.	डॉ कलशेट्टी एम. के.	हिन्दी लघुकथाओं में वर्तमान विचार धारा	४७
१२.	डॉ. वडचकर एस.ए.	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति	५१
१३.	डॉ.राम सदाशिव बडे	स्त्री विमर्शः हिंदी साहित्य के संदर्भ में	५५
१४.	डॉ. प्रियदर्शिनी	रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और काव्य सौंदर्य	६१
१५.	प्रा.डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ	हिंदी की आदिवासी कहानी में स्त्री विमर्श	६७
१६.	संभाजी शामराव गेजगे	ऐलान गली जिन्दा है में सामाजिक संघर्ष	७३
१७.	डॉ.नितीन बी.कुंभार	प्रेमचंद के उपन्यासों में मानवतावाद का दर्शन	७८
१८.	शिंदे संतोष सखाराम	गीतांजली श्री की कहानियों मे स्त्री – विमर्श	८१
१९.	किशोर श्रीमंत ओहोळ	मिथिलेश्वर के 'सुरंग में सुबह' उपन्यास में राजनीतिकता	८४
२०.	बबीता कुमारी	आदिवासी हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास	८८
२१.	प्रा. रईसा मिर्झा	समकालीन कथा साहित्य में नारी संवेदना	९५
२२.	नदाफ अजरोददीन	वैश्विकरण में हिंदी का योगदान	१००

हिन्दी साहित्य की वर्तमान विचारधारा विमर्श के लिए प्रस्तुत शोधालेख जयशंकर प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय भावना

प्रा.डॉ.जोशी संजय व्यंकटराव
हिंदी विभाग
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
उस्मानाबाद
मो. ९४०३३९०२६९

हिन्दी साहित्य के अंतर्गत विभिन्न साहित्यकारों ने भारत देश संस्कशति और उसके गुणगौरव का वर्णन किया है। इसकी एक सुदिर्घ ऐसी परम्परा रही है। एक हजार साल से हिन्दी साहित्य में परम्परा रही है। जिसमें देश की राष्ट्रीय भावना का वर्णन संत, भक्त, कवि, साहित्यकार करते रहे है। आधुनिक काल में 'भारतेंन्दु हरिश्चंद्र' ने भारत देश के गुणगौरव का वर्णन अपने नाटकों में अपने सहित्य मे किया वे साहित्य के माध्यम से अंग्रेजो की दमणनीति का वर्णन किया करते थे। उनके समकालिन साहित्यकारों में यही रहा प्रसाद युग में साहित्यकार भारत देश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कशतिक परिस्थिती का वर्णन करते थे। जयशंकर प्रसाद इस काल में प्रमुख साहित्यकार है जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को चित्रीत किया इसके लिए उन्होंने भारत देश के अतीत और स्वर्णीय क्षणोंका आधार लिया।

भारतीय संस्कशतीमें अंग्रेजी सभ्यता की मिलावट प्रसादजी के युग में अपनी चरम सीमा पर थी। अंग्रेजी चमक–दमक में डूबी नई पीढी अपने सांस्कशतिक मूल्यों का स्मरण भी लज्जास्पद समझाती थी। ऐसे में देश को विनाश से बचाने का एकमात्र उपाय था सांस्कशतिक पुनर्जागरण। साहित्यकार का लक्ष्य होता है किन्तु उनकी कार्य–पध्दति अलग–अलग होती है। साहित्यकार मातश्वत् अपने कोमल स्पर्श से सहला कर सन्मार्ग की ओर संकेत करता है। संघर्षमय युग में आर्य समाज, प्रार्थना समाज आदि संस्थाओं तथा विवेकानन्द, रामकश्ण परमहंस एवं गॉधी आदि ने जहॉ पिता का दायित्व सम्हाला वहॉ साहित्यकार ने माता के समान सामाजिक जीवन नौका की पतवार थामी।

समाज को तत्कालीन परिस्थिती से परिचित करने का प्रयास प्रेमचंद्र जैसे साहित्यकारों ने किया। 'प्रसाद' जी ने भी इस दिशा में नीति–निपुणता से काम लिया। प्रसाद जी, मानव–मन के पारखी थे। उन्हें ज्ञात था कि अनुशासन के अंकुश

से मन विद्रोह कर देता है। किन्तु आकर्षण के प्रलोभन से उसे मार्ग पर लाना सरल होता है। प्रसाद ने इस प्रयास में वर्तमान की चिकित्सा हेतु अतीत में औषधि खोजी। भारतीय इतिहास में से उन्होंने दो तरह के उदाहरण चुने एक तो वे जो अत्यन्त गौरवपूर्ण थे, जो यह बताते थे की हम क्या थे। इससे लोगों की समझ में आया कि हम क्या से क्या हो गये है। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय इतिहास के वे दोष भी चुने जिनमें यह संकेत था कि यदि वही गलती इनमे दोहरायी तो हम और भी किस दशा में पहुँचगे। अतीत के इस सम्मिलित वर्णन द्वारा प्रसादजी जन मानस को सही दिशा प्रदान करने वाला संदेश देते है।

'प्रसादजी' ने अपने नाटकों में आदर्श चरित्रों के जरिये विदेशी संस्कशति के समक्ष भारतीय संस्कशति को उच्च महत्व प्रदान किया है। इसके कई उदाहरण मिलते है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में सिकन्दर दाण्डायन ऋषि को अपनी ओर मिलाकर भारत की बुध्दि का प्रयोग अपने हित में करने का प्रयास करता है तो दाण्डायन निर्भीकतापूर्वक उसका विरोध करते है। सांस्कशतिक–मूल्य जीवन के उच्चतम आदर्श है। इनका लक्ष्य व्यक्ति के चारित्रिक उत्थान के माध्यम से जाति का उच्चतम विकास करना है। प्राचीन भारत में हमारी संस्कशति का स्वरूप मूलत: आध्यात्मिक था। जगत् के कण–कण में उस अध्यात्म सज्ञा के स्पंदन की भारतीय मनीषा ने अनुभव किया था। उस पूर्ण चेतना को अपनी चेतना में धारण किए हुए अपनी जाति एवं समाज की रक्षा के लिए कर्तव्य करते रहना हमारी संस्कशति का प्रमुख आदर्श था। इस आदर्श को अपनी चेतना में सदा प्रज्वलित रखने के लिए करूणा, प्रेम, उदारता, धैर्य, क्षमा साहस एवं आत्म–बलिदान के गुण हमारे सहचर थे। ऐसा प्रसादजी का विश्वास था।

भारतीय संस्कशति में निहित जीवन के उच्चतम आदर्शो को सामाजिक चेतना में अंकित कर देना 'प्रसाद'जी का लक्ष्य रहा है। इस लक्ष्य को लेकर उन्होंने अपने नाटकों मे कथानक में प्रसंगानुसार सांस्कशतिक आदर्शो की स्थापना की है। 'प्रसाद' जी साहित्यकार होने का दायित्व पूर्णता निभाया है। तत्कालीन समाज–व्यवस्था के गुण–दोष, राजनीतिक दशष्टि से संकुचित बुध्दि का परिणाम तथा आर्यावर्त के विशाल आदर्श के लिए संघर्ष करते चाणक्य के चित्रणद्वारा प्रसाद जी ने प्राचीन भारतीय संस्कशति को मानो पुन: सजीव कर दिया है। नाटक में विवेच्य काल की विघटनकारी परिस्थितियों के जरिये देशवासियों के समक्ष सीमित स्वार्थपरकता के स्थान पर राष्ट्रीयता की भावना को अपना लक्ष्य बनाया है। देश की वर्तमान राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने की दशष्टि से चंद्रगुप्त नाटक के कथानक का प्रतीकात्मक प्रयोग है। जिस प्रकार नंद का शासन अत्याचार और विलास का शासन था, जिस प्रकार भारतीय नरेशों के आपसी फूट के कारण सिकन्दर भारत के कुछ

भाग में घुस आया, उसी प्रकार आपसी मनो–मालिन्य के कारण प्रसादयुगीन विदेशी शासक भी देश के भीतर कुछ सीमा तक घुस आने में सफल हुए। बाह्य शत्रु और अत्याचार को मिटाने के लिए संपूर्ण राष्ट्र को उसी प्रकार एक होने की आवश्यकता है जिस प्रकार चन्द्रगुप्त नाटक में अंत तक सिंहरण, पौरव, आंभीक आदि एक हो जाते है।'' केवल प्रसाद–युग ही नही आधुनिक युग की समस्याओं का समाधान भी चन्द्रगुप्त नाटक प्रस्तुत करता है। आज भी देश की युगीन परिस्थिती धीरे–धीरे विघटनकारी होती जा रही है, केवल नाम बदले है परिस्थितीयॉ जैसी की तैसी है।

'प्रसाद जी ने भारतीय नाट्य परम्परा के अनुसार नाटकीय रचनाओं में रस को निष्पत्ति आवश्यक मानी है। उन्हें, आधुनिक काल में रहस्यवादी काव्यधारा का प्रवर्तक कहा जाता है। प्रसादजी मूलत: स्वच्छन्दतावादी मनोवशत्ति के साहित्यकार थे, इसलिए हम उन्हें भारतीय आदर्शवादी नाट्य दशष्टि से आगे बढकर, पाश्चात्य नाटककारों की भॉति इस जगत् के संघर्षमय स्वरूप का यथार्थता के साथ उद्घाटन करते हुए देखते हैं। प्रसाद जी ने अपने रंगमंच शीर्षक निबन्ध में, प्रारम्भ में शास्त्रीय ग्रंथो के आधार पर अपने देश के प्राचीन काल के रंगमंच के स्वरूप को स्पष्ट किया है। इसके बाद उन्होंने लिखा है कि भारतीय नाट्य परंम्परा के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि समय–समय पर, उपलब्ध नाट्य रचनाओं के आधार पर ही रंगमंच की रचना हुई थी। इस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं, पात्रो को आधार बनाकर नाटककार प्रसाद ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नाटकों का प्रणयन किया है जिनमें सांस्कशतिक एवं राष्ट्रीय चेतना भी मुखरित हुई है।

राष्ट्रीयता में गौरवशाली विजय का उल्हास है। उनके नाटकों में भारतीय शक्ति, शौर्य, सेवा, क्षमा, बलिदान सभी चित्र प्रस्तुत है। विदेशी विजेताओं के दम्भ को उन्होंने चुनौतीपूर्ण उत्तर नाटकों मे दिए है।

प्रसादजी नाट्य साहित्य के माध्यम से भारत देश की गौरव गाथा का वर्णन करते है। उन्होंने तत्कालीन परिस्थिती को अपने नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वे अपने नाटकों के माध्यम से भारतीय जनता को यहॉ के वीरो को प्रेरीत करते है।

हिमाद्रि तुंग श्रश्ंग से,
प्रबुध्द शुध्द भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दश्ढ प्रतिज्ञ सोच लो।
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढे चलो बढे चलो।

संदर्भ सूची :–

१. आधुनिक हिन्दी–मराठी नाटक :– संपादन डॉ.संजय नवले, डॉ.ना
गोरे, डॉ.देविदास इंगले, डॉ.बलिराम धापसे

२. प्रसाद के नाटकों का शाश्वत संदेश :– डॉ.कपिल म.पटेल

३. हिन्दी नाटक एवं रंगमंच :– डॉ.पशुपतीनाथ उपाध्याय